**Date – 14 July 2022**

# श्रीलंका संकट

- राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे और प्रधान मंत्री रानिली विक्रमसिंघे द्वारा ऐतिहासिक नागरिकों के विरोध के दबाव में अपने इस्तीफे की घोषणा के एक दिन बाद, विभिन्न श्रीलंकाई राजनीतिक दलों ने एक सर्वदलीय सरकार बनाने के प्रयास तेज कर दिए हैं।
- श्रीलंका के विभिन्न हिस्सों में सरकार विरोधी भावना के निरंतर प्रसार ने देश में राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति पैदा कर दी है। देश में आर्थिक संकट की स्थिति में लोग सड़क पर उतर आए हैं और सरकार विरोधी प्रदर्शन उग्र होते जा रहे हैं|
- भुगतान संतुलन (बीओपी) की गंभीर समस्याओं के कारण श्रीलंका की अर्थव्यवस्था अभूतपूर्व संकट का सामना कर रही है। इसका विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से घट रहा है और देश के लिए आवश्यक उपभोग की वस्तुओं का आयात करना कठिन होता जा रहा है।

- श्रीलंकाई रुपये में 80% से अधिक की गिरावट आई है, खाद्य लागत में 50% से अधिक की तेजी से वृद्धि हुई है और COVID-19 महामारी के कारण पर्यटन (देश के लिए एक प्रमुख राजस्व स्रोत) में तेजी से गिरावट आई है।
- इस परिदृश्य में, श्रीलंका में राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता के उदय के कारणों और प्रभावों पर विचार करना प्रासंगिक होगा।

## श्रीलंकाई संकट क्यों?

### पृष्ठभूमि:

- जब श्रीलंका 2009 में 26 साल के लंबे गृहयुद्ध से बाहर आया, तो युद्ध के बाद उसकी जीडीपी वृद्धि 8-9% प्रति वर्ष के उच्च स्तर पर थी और 2012 तक ऐसी ही बनी रही।
- लेकिन 2013 के बाद, इसकी औसत जीडीपी विकास दर गिरकर लगभग आधी रह गई क्योंकि वैश्विक कमोडिटी की कीमतें गिर गईं, निर्यात धीमा हो गया और आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- युद्धकाल के दौरान श्रीलंका का बजट घाटा उच्च बना रहा और 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट ने उसके विदेशी मुद्रा भंडार को समाप्त कर दिया, जिससे देश को 2009 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से 6 अरब डॉलर उधार लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- वर्ष 2016 में, उन्होंने फिर से 5 अरब डॉलर के ऋण के लिए आईएमएफ से संपर्क किया, लेकिन आईएमएफ की शर्तों के अनुपालन से श्रीलंका की आर्थिक स्थिति खराब हो गई।

### श्रीलंका के उर्वरक प्रतिबंध:

- वर्ष 2021 में, सरकार ने सभी उर्वरक आयातों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया और श्रीलंका को रातोंरात 100% जैविक खेती वाले देश में बदलने की घोषणा की।
- जैविक खेती की ओर इस त्वरित कदम ने देश में खाद्य उत्पादन को बुरी तरह प्रभावित किया।
- बिगड़ते परिदृश्य में, सरकार ने बढ़ती खाद्य कीमतों, मुद्रा के अवमूल्यन और तेजी से घटते विदेशी मुद्रा भंडार को नियंत्रित करने के लिए देश में आर्थिक आपातकाल की घोषणा की।
- विदेशी मुद्रा की कमी के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर रातोंरात लगाए गए प्रतिबंधों के कारण खाद्य कीमतों में तेज वृद्धि हुई है।
- चीन की ऋण जाल नीति ने भी श्रीलंका में आर्थिक अस्थिरता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- श्रीलंका का संकट मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा भंडार में कमी के कारण उत्पन्न हुआ, जो पिछले दो वर्षों में 70% घटकर फरवरी 2022 के अंत तक मात्र 2 बिलियन डॉलर रह गया था।
- जबकि देश पर इस समय करीब 7 अरब डॉलर का विदेशी कर्ज है।

**राजनीतिक शून्य की वर्तमान स्थिति:**

- प्रधान मंत्री विक्रमसिंघे और राष्ट्रपति राजपक्षे ने संकेत दिया था कि वे एक सर्वदलीय सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए इस्तीफा देंगे।

**श्रीलंका संकट भारत को कैसे प्रभावित कर रहा है?**

**चुनौतियां:**

**आर्थिक:**

- भारत के कुल निर्यात में श्रीलंका का हिस्सा, जो वित्त वर्ष 2015 में 2.16% था, वित्त वर्ष 22 में घटकर केवल 1.3 प्रतिशत रह गया है।
- टाटा मोटर्स और टीवीएस मोटर्स जैसी ऑटोमोटिव फर्मों ने श्रीलंका को वाहन किट का निर्यात बंद कर दिया है और देश के अस्थिर विदेशी मुद्रा भंडार और ईंधन की कमी को देखते हुए अपनी श्रीलंकाई असेंबली इकाइयों में उत्पादन रोक दिया है।

**शरणार्थी संकट:**

- जब भी श्रीलंका में कोई राजनीतिक या सामाजिक संकट आया है, तो भारत को पाक जलडमरूमध्य और मुन्नार की खाड़ी के माध्यम से जातीय तमिल समुदाय से बड़ी संख्या में शरणार्थियों का सामना करना पड़ा है।
- बड़ी संख्या में तमिल शरणार्थियों को संभालना भारत के लिए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से बहुत कठिन हो सकता है, इसलिए इस संकट से निपटने के लिए एक ठोस नीति की आवश्यकता है।
- श्रीलंका से 16 अवैध आगमन दर्ज होने के साथ तमिलनाडु राज्य ने भी संकट के प्रभाव को महसूस करना शुरू कर दिया है।

**अवसर:**

**चाय बाजार:**

- वैश्विक चाय बाजार में श्रीलंकाई चाय की आपूर्ति अचानक बंद होने के बीच भारत आपूर्ति के इस अंतर को भरने का इच्छुक है।
- भारत ईरान के साथ-साथ तुर्की, इराक जैसे नए बाजारों में अपनी उपस्थिति मजबूत कर सकता है।

- ईरान, तुर्की, इराक और रूस के बड़े श्रीलंकाई चाय आयातक कथित तौर पर असम और कोलकाता में चाय बागानों की तलाश में भारत आ रहे हैं।
- परिणामस्वरूप, कोलकाता में हाल की नीलामी में परंपरागत रूप से उगाए गए रूढ़िवादी पत्तों की औसत कीमत पिछले वर्ष की इसी बिक्री की तुलना में 41 प्रतिशत बढ़ गई है।

**परिधान बाजार:**

- यूनाइटेड किंगडम, यूरोपीय संघ और लैटिन अमेरिकी देशों से कई परिधान ऑर्डर अब भारत भेजे जा रहे हैं।
- तमिलनाडु में कपड़ा उद्योग के एक प्रमुख केंद्र तिरुपुर में स्थित कंपनियों को ऐसे कई आदेश प्राप्त हुए हैं।

## श्रीलंका की मदद भारत के हित में क्यों है?

- श्रीलंका भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। भारत इस अवसर का उपयोग श्रीलंका के साथ अपने राजनयिक संबंधों को संतुलित करने के लिए कर सकता है, जो चीन के साथ श्रीलंका की निकटता से कुछ हद तक प्रभावित हुआ है।
- श्रीलंका और चीन के बीच उर्वरक के मुद्दे पर असहमति के कारण, भारत द्वारा उर्वरक आपूर्ति को द्विपक्षीय संबंधों में सकारात्मक विकास के रूप में देखा जा रहा है।
- श्रीलंका के साथ राजनयिक संबंधों के विस्तार से भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' नीति से श्रीलंकाई द्वीपसमूह की मदद करने में मदद मिलेगी।
- श्रीलंका के लोगों की कठिनाइयों को कम करने के लिए यथासंभव भारत की सहायता इस सावधानी से आगे बढ़ाई जानी चाहिए कि उसकी सहायता भी दिखाई दे ताकि श्रीलंका में भारत के लिए सद्भावना फैल सके।

## श्रीलंका इस संकट से कैसे उबर सकता है?

**वास्तविक अर्थों में लोकतंत्र को लागू करना:**

- बेहतर संकट प्रबंधन के लिए श्रीलंका में मजबूत राजनीतिक सहमति की जरूरत है। प्रशासन के सैन्यीकरण को कम करना भी एक उचित कदम होगा।
- गरीब और कमजोर आबादी को फिर से सक्षम बनाने और अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक नुकसान को रोकने में मदद करने के लिए विभिन्न उपायों पर विचार करने की आवश्यकता है।
- इन उपायों में कृषि उत्पादकता बढ़ाना, गैर-कृषि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाना, सुधारों का बेहतर क्रियान्वयन और पर्यटन क्षेत्र को पुनर्जीवित करना शामिल है।

## भारत से समर्थन:

- भारत, पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए 'पड़ोसी पहले नीति' का पालन करते हुए, श्रीलंका को मौजूदा संकट से उबरने और अपनी क्षमता का एहसास करने के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान करनी चाहिए, जो एक स्थिर और मैत्रीपूर्ण पड़ोस से लाभान्वित होगी। भारत को भी यह फॉर्म में मिल जाएगा।
- भारतीय व्यवसाय आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण कर सकते हैं जो आवश्यक वस्तुओं से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं तक, वस्तुओं और सेवाओं के व्यापक स्पेक्ट्रम में भारतीय और श्रीलंकाई अर्थव्यवस्थाओं को आपस में जोड़ती हैं।
- भारत ने मार्च के मध्य से श्रीलंका को 270,000 मीट्रिक टन से अधिक डीजल और पेट्रोल की आपूर्ति की है।
- इसके अलावा, भारत द्वारा हाल ही में विस्तारित $1 बिलियन लाइन ऑफ क्रेडिट के तहत लगभग 40,000 टन चावल की आपूर्ति भी की गई है।
- भारत जी20 जैसे बहुपक्षीय मंचों में श्रीलंका की उपस्थिति को भी सुगम बना सकता है, जो श्रीलंका को विकसित देशों से सहायता प्राप्त करने के लिए एक आधार प्रदान करेगा।

## अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से राहत:

- श्रीलंका ने 'बेलआउट' के लिए आईएमएफ से संपर्क किया है। आईएमएफ मौजूदा आर्थिक संकट से उबरने के श्रीलंका के प्रयासों का समर्थन कर सकता है।
- आईएमएफ गरीबों और कमजोर लोगों की रक्षा, वित्तीय स्थिरता की रक्षा करने और भ्रष्टाचार से संबंधित कमजोरियों को दूर करने और श्रीलंका की विकास क्षमता का एहसास करने के लिए संरचनात्मक सुधारों को आगे बढ़ाकर व्यापक आर्थिक स्थिरता और ऋण स्थिरता की बहाली में योगदान कर सकता है।

## चक्रीय अर्थव्यवस्था की संभावनाओं का उपयोग करना:

- श्रीलंका में आर्थिक अस्थिरता के संदर्भ में आयात पर निर्भरता को सर्कुलर अर्थव्यवस्था द्वारा कम किया जा सकता है जो वसूली में सहायता के लिए एक स्थायी विकल्प प्रदान करेगा।

स्वदीप कुमार

# भारतीय रुपये में लगातार गिरावट के कारण और प्रभाव

## संदर्भ क्या है ?

- वर्ष2022 में भारतीय रुपये में अमेरिकी डॉलर की तुलना में लगातार गिरावट देखी जा रही है। अमेरिकी डॉलर की तुलना में भारतीय रुपया इतिहास में पहली बार 80 के काफी पास पहुंच चुका है। प्रश्न है कि लगातार हो रही इस गिरावट में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए क्या संदेश निकलकर आता है , लेकिन रुपये की कीमत के गिरने के पीछे कई कारण हैं अन्तर्निहित हैं।
- डॉलर की तुलना में रुपये की कीमत में गिरावट वर्ष 2022 की शुरुआत से ही देखी जा रही है और फरवरी में यूक्रेन युद्ध के शुरू हो जाने के बाद से संकट और बढ़ गया।

## मूल्य ह्रास क्या है?

मुद्रा मूल्य ह्रास को एक अस्थायी विनिमय दर प्रणाली में मूल्य में गिरावट के रूप में परिभाषित किया जाता है। रुपये के मूल्य ह्रास का आशय अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया के कम मूल्यवान होने से है। मूल्य ह्रास के कारण रुपया पहले की तुलना में कमजोर होता है। ऐसा सरकार के निर्णय के कारण नहीं, बल्कि आपूर्ति और मांग- पक्ष के कारकों के कारण होता है।

## अवमूल्यन और मूल्य ह्रास में क्या अंतर है ?

अवमूल्यन शब्द का प्रयोग तब किया जाता है, जब सरकार निश्चित दर प्रणाली के अंतर्गत मुद्रा के मूल्य को कम करती है। मूल्य ह्रास तब होता है, जब अस्थायी विनिमय दर में गिरावट के कारण एक मुद्रा के मूल्य में कमी या ह्रास होता है।

## वर्तमान में रुपए के मूल्य ह्रास के क्या कारण हैं ?

- **रूस- यूक्रेन युद्धः**भारतीय रुपए में गिरावट के पीछे रूस-यूक्रेन युद्ध प्रमुख कारण के रूप में देखा जा रहा है। रूस के यूक्रेन पर आक्रमण किये जाने के कारण भारतीय रुपये में ही नहीं बल्कि अन्य उभरते बाजारों की मुद्राओं में भी गिरावट आई है। यूरो तो गिरते-गिरते डॉलर के बराबर तक आ गया।
- **ब्याज दरों में वृद्धिः**उच्च ब्याज दरें नए निवेश को हतोत्साहित करती हैं, बचत को प्रोत्साहित कर सकती हैं और परिणामस्वरूप उत्पादन और मुद्रास्फीति को कम करती हैं।
- **कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धिः** कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि14 वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। इसका मुख्य कारण यूक्रेन में चल रहा संघर्ष है। इससे भारत के आयात लागत में वृद्धि होने से रुपए के मूल्य ह्रास को बढ़ावा मिला है।
- **सख्त मौद्रिक नीतिः** भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बढ़ती मुद्रास्फीति का मुकाबला करने के लिए सख्त मौद्रिक नीति का पालन करने से भी रुपए का मूल्य ह्रास हुआ है।
- **अमेरिकी डॉलर का बहिर्गमनः** कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि और इक्विटी बाजारों में सुधार के कारण डॉलर का तेजी से बहिर्गमन हुआ है।

रूस -यूक्रेन संकट और अमरीकी फैडरल रिजर्व की ब्याज दर में हुई वृद्धि रुपए की वर्तमान कमजोरी के पीछे के कारण बताए जा रहे हैं, क्योंकि यूक्रेन संकट के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई है। घरेलू शेयर बाजार में दबाव, क्रूड ऑइल की महंगाई, मंदी की आशंका और अमेरिकी डॉलर की मजबूती के चलते रुपया लगातार कमजोर हो रहा है। महंगे कच्चे तेल के लिए अधिक डालर चुकाने की वजह से डालर की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, दूसरी तरफ फैडरल रिजर्व ने 2 दशक में पहली बार ब्याज दर में 50 आधार अंकों की वृद्धि की है। इससे स्वत: ही विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफ.आई.आई.) का आकर्षण अमरीकी अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ा है।

## मुद्रा मूल्य ह्रास का भारत पर प्रभाव

**नकारात्मक प्रभाव**

- **आयात लागत और चालू खाते के घाटे में वृद्धिः** रुपए के मूल्य ह्रास के कारण भारत का वाणिज्यिक व्यापार घाटा अप्रैल 2022 में बढ़कर 20.1 अरब डॉलर हो गया। इससे विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होगी।
- **बढ़ती मुद्रास्फीति:** यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के कारण कच्चे तेल की कीमत 14 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। इससे देश में मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलेगा।
- **तेल की कीमतों में वृद्धिः** भारत अपनी ईंधन आवश्यकताओं का लगभग 80% आयात करता है। मूल्य ह्रास के कारण तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण मुद्रास्फीति अधिक हो जाएगी।

**सकारात्मक प्रभाव**

- **निर्यातः**मुद्रा के मूल्य ह्रास से निर्यात को लाभ हो सकता है। डॉलर की मजबूती निर्यात- उन्मुख कंपनियों के लिए लाभदायक सिद्ध होती है।
- **निर्यातकों को लाभः**मुद्रा में मूल्य ह्रास से भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होता है। इससे निर्यातकों को लाभ मिल सकता है।
- **पर्यटन उद्योगः**यात्रा और पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जिसे रुपये के मूल्य ह्रास से लाभ होता है।

## मूल्य ह्रास को कम करने के उपाय

- भारतीय रिजर्व बैंक को अपनी मौद्रिक नीति में परिवर्तन करते हुए ब्याज दरों में वृद्धि करनी होगी। भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेशकों के विश्वास को मजबूत करने एवं पूंजी प्रवाह और विनिमय दर को स्थिर करने के लिए निवेश और विकास को बढ़ावा देना होगा तथा इसके लिए सरकार को अधिक व्यय करना होगा।
- नीतिगत उपाय के तहत भारतीय रिजर्व बैंक ब्याज दर बढ़ा कर बाजार में तरलता घटा कर रुपए की मांग बढ़ाने का प्रयास करता है, दूसरे, बाजार में डालर की आपूर्ति बढ़ाने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार से डालर बेचता है ।

भारतीय रिजर्व बैंक के लिए बाजार में डालर की आपूर्ति बढ़ाना भी वर्तमान में कठिन कदम है, क्योंकि देश का विदेशी मुद्रा भंडार 600 अरब डालर से नीचे चला गया है। इसमें लगातार गिरावट का रुख बना हुआ है। यदि अधिक आय वाले लोगों पर प्रत्यक्ष कर और कार्पोरेट कर बढ़ाया जाए, अप्रत्यक्ष कर घटा

कर महंगाई नीचे लाई जाए तो इससे बाजार में मांग बढ़ेगी, नौकरियां पैदा होंगी। अर्थव्यवस्था स्थिर होगी तो विदेशी निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा।

मुकुंद माधव